प्रातः क्लास 22/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। इसको विचित्र रूहानी पढ़ाई भी कहा जाता है। नई दुनिया सतयुग में भी देहधारी ही एक/दो को पढ़ाते हैं। नॉलेज तो सभी पढ़ाते ही हैं। यहाँ भी पढ़ाते हैं। वह सभी देहधारी एक/दो को पढ़ाते हैं। ऐसे कब सुना नहीं होगा कि विदेही या रूहानी बाप पढ़ाते हैं। शास्त्रों में भी भगवानुवाच लिख दिया है पर कृष्ण का नाम डाल दिया है। तो वह भी देहधारी हो गया ना। यह नई बात सुन मुँझ जाते हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझते हैं कि रूहानी बाप हम रूहों को पढ़ाते हैं। यह है नई बात। सिर्फ इस संगम युग पर ही बाप खुद आकर कहते हैं इस द्वारा मैं तुमको पढ़ाता हूँ। ज्ञान का सागर, शांति का सागर, सुख का सागर सभी आत्माओं का बाप भी वही है। यह समझ की बात है ना। देखने में तो कुछ भी नहीं आता। यह भी समझते हो आत्मा ही है मुख्य। और वह अविनाशी है। शरीर तो विनाशी है। अभी वह अविनाशी आत्मा बैठ पढ़ती है। भल तुम सामने देखते हो यह तो साकार शरीर बैठा है; परन्तु यह तुम जानते हो कि ज्ञान यह देहधारी नहीं देते हैं। ज्ञान देने वाला वही विदेही बाप है। कैसे देते हैं वह भी तुम समझते हो। मनुष्य लोग तो बड़ा ही मुश्किल समझते हैं। कितना तुमको माथा मारना पड़ता है यह निश्चय कराने लिए। वह तो कह देते निराकार का कोई नाम–रूप, देश–काल ही नहीं है। वह बाप खुद बैठ पढ़ाते हैं। कहते हैं मैं तुम सभी आत्माओं का बाप हूँ। जिसको तुम देख नहीं सकते हो। समझते हो वह विदेही है। परम–आत्मा है। उनकी सभी महिमा गाते हैं ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर..... वह कैसे पढ़ावेंगे। बाप खुद बैठ समझाते हैं मैं कैसे आता हूँ। किसका आधार लेता हूँ। मैं कोई गर्भ से जन्म नहीं लेता हूँ। मैं कब मनुष्य वा देवता नहीं बनता हूँ। देवताएँ भी शरीर लेते हैं। मैं तो अशरीरी ही सदैव रहता हूँ। मेरा ही ड्रामा में यह पार्ट है जो मैं कब पुनर्जन्म में नहीं आता हूँ। तो यह समझ की बात है ना। देखने में तो ..... ही नहीं है। वह तो समझते हैं कृष्ण भगवानुवाचः भक्तिमार्ग में रथ भी कैसे बैठ बनाया है। बाप कहते हैं बच्चे तुम मुँझते तो नहीं हो अगर कुछ न समझते हो तो बाप से आकर समझो। यूँ तो बिगर पूछे भी बाप सभी कुछ समझाते रहते हैं। तुमको कुछ भी पूछने की दरकार ही नहीं। मैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही अवतार लेता हूँ। मेरा जन्म भी वन्डरफुल है। तुम बच्चों को भी वन्डर लगता है। कितना बड़े ते बड़ा इम्तहान पास कराते हैं। बहुत बड़े ते बड़ा विश्व का मालिक बनाने लिए (आ)ते हैं। वन्डरफुल बात है ना। हर 5000 वर्ष बाद हे आत्माएँ मैं तुम्हारी सर्विस में आता हूँ। आत्माओं को पढ़ाते हैं। कल्प कल्प कल्प के संगमयुग हे जीव की आत्माएँ मैं जो तुम आत्माओं का बाप हूँ तुम्हारी सेवा में आता हूँ। आधा कल्प तुम पुकारते आये हो हे पतित–पावन आओ। कृष्ण को कोई पतित–पावन नहीं कहते। पतित–पावन परमपिता–परमात्मा को ही कहते हैं वह सभी आत्माओं का एक है। आत्मा ही इन ऑरगन्स द्वारा पुकारती है। आत्मा समझती है हम शरीर धारण कर यह पार्ट बजाते हैं। बाबा को भी आना पड़ेगा पतितों को पावन बनाने। इसलिए कहा जाता है अकाल मूर्त बाबा, अकालमूर्त सत टीचर, अकाल मूर्त सद्गुरु। सिक्ख लोगों की बहुत अच्छे यह श्लोक; परन्तु उन्हों को भी यह पता नहीं है कि सद्गुरु अकालमूर्त कब आते हैं। यह भी गायन है मानुष ते देवता.....कब आकर मनुष्य को देवता बनाते हैं यह समझते नहीं। सद्गुरु अकालमूर्त (आ)कर ही चेंज करते हैं। वे ही सर्व की सद्गति करने वाले हैं। यह तो पक्का निश्चय होना चाहिए। क्या आकर (क)रते हैं, सिर्फ कहते हैं मन्मनाभव। उसका अर्थ भी समझाते हैं। तुमको सद्गुरु अकालमूर्त बैठ समझाते हैं इस ....ह द्वारा कि अपन को आत्मा समझो। यह तो अच्छी रीति समझना चाहिए। विश्व का मालिक बनाने बाप (को) ही आना पड़ता है तुम बच्चों की सेवा में। समझाते हैं हे रूहानी बच्चों तुम सतोप्रधान थे। फिर पार्ट बजाते–2 सतोप्रधान भी बनना ही है। यह सृष्टि का चक्र फिरता ही रहता है ना। यह सृष्टि चक्र उनकी आयु आदि तुम नहीं ....जानते थे। सभी पतित बन गये थे। पावन दुनिया इन देवताओं की दुनिया थी। वह सभी कहाँ गये, किसको भी पता नहीं है। मुँझे हुए हैं। बाप आकर तुमको कितना समझदार बनाते हैं। बच्चे मैं एक ही बार

आता हूँ। पावन दुनिया में मैं आऊँ ही क्यों। वहाँ तो काल आ नहीं सकता। बाप तो कालों का काल है ना। सतयुग में आने की दरकार ही नहीं। वहाँ काल भी नहीं आता। तो महाकाल, प्रकालों का काल भी नहीं आता। यह आकर सभी आत्माओं को ले जाते हैं। खुशी से चलते हो ना। हाँ बाबा! हम खुशी से चलने लिए तैयार हैं तब तो बुलाया था आपको इस पतित दुनिया से हमको पावन दुनिया में ले चलो वाया शान्तिधाम। यह बातें घड़ी2 भूल न जाओ; परन्तु माया दुश्मन खड़ा है। घड़ी2 भुला देती है। इसलिए रोज़–2 बाप को समझाना पड़ता है। रोज़ सुजाग न करे तो माया बहुत नुकसान कर देती है। मैं सर्वशक्तिवान हूँ तो माया भी शक्तिवान है। वह भी आधा कल्प तुम पर राज्य करती है। तो रूहानी बाप आकर रूहों को पवित्र बनाकर नॉलेज देते हैं। माया फिर आकर अपवित्र बना देती है। खेल ही अपवित्र–पवित्र का है। अभी बाप कहते हैं अपनी चलन सुधारने पवित्र बनो। काम विकार के लिए झगड़े आदि होते हैं। बाप कहते हैं अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है तो आत्मा को ही देखो। इन जिस्मानी नेत्रों से देखो ही नहीं। हम सभी आत्माएँ भाई–2 हैं विकार कैसे करेंगे। हम नंगे आये थे फिर नंगे जाना है। सतोप्रधान आत्मा आई थी फिर सतोप्रधान होकर जाना है अपने स्वीटहोम। मुख्य है ही पवित्रता की बात। सतोप्रधान जरूर बनना है। मनुष्य कहते हैं रोज़2 वही बातें समझाते हैं। यह तो ठीक है, परन्तु जो समझाया जाता है उस पर चले भी ना। करने के लिए समझाया जाता है; परन्तु करते थोड़े हैं तो जरूर रोज़–2 समझाना पड़े ना। ऐसे थोड़े ही कहते हैं बाबा आप जो रोज़ समझाते हो वह हमने अच्छी रीत समझ लिया। हम अब तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे, आप छूटे। ऐसे कहते हैं क्या। यह तो हो नहीं सकता। इसलिए बाप को भी रोज़2 समझाना पड़ता है। बात तो ठीक ही है; परन्तु करते नहीं हैं ना। बाप को याद ही नहीं करते। कहते हैं बाबा घड़ी–2 भूल जाते हैं तो बाप को घड़ी–2 कहना पड़ता है याद दिलाने लिए। तुम भी एक दो को यही समझाओ कि अपन को आत्मा समझ परमात्मा बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप कट जाये। और कोई उपाय नहीं। शुरू और अन्त में यही बात कहते हैं। याद से ही सतोप्रधान बनना है। खुद ही लिखते हैं बाबा माया के तूफान भुलाये देती है तो क्या बाप सा(व)धान न करे। छोड़ दे? बाप जानते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जब तक सतोप्रधान न बने हैं जा नहीं सकते। लड़ाई का भी कनेक्शन है ना। लड़ाई लगेगी ही तब जब तुम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सतोप्रधान बनेंगे। ज्ञान तो एक सेकण्ड का है। बेहद के बाप को पा..... उनसे बेहद का सुख तब मिलेगा जब पवित्र बनेंगे। पुरुषार्थ अच्छी रीत करना है। कई तो कुछ भी समझते नहीं हैं। बाप को याद करने का भी अकल नहीं आता। कब यह पढ़ाई तो पढ़ी न है। सारे चक्र में निराकार बाप से कोई पढ़ा न है। तो यह नई बात है ना। बाप तो कहते हैं मैं हर 5000 वर्ष बाद आता हूँ तुमको सतोप्रधान बनाने। जब तक सतोप्रधान न बने हैं तब तक पद पा न सकेंगे। जैसे और पढ़ाई में फेल होते हैं वैसे इसमें भी फेल होते हैं। कुछ भी समझते नहीं हैं। शिवबाबा को याद करने से क्या होगा कुछ भी नहीं समझते। बाप है तो बाप से जरूर स्वर्ग का वरसा मिलना है। स्वर्ग भी 2500 वर्ष चलता है। सतयुग त्रेता को स्वर्ग, द्वापर कलियुग को नर्क कहा जाता है। यह बातें मनुष्य नहीं जानते। बाप को ही आकर समझाना पड़ता है। बाप कहते हैं कल्प2 मैं एक ही बात समझाता हूँ। गुरु भी एक ही मंत्र देते हैं। 10 मंत्र थोड़े ही देगा। यह तो मंत्र की बात ही नहीं। यह तो मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई है। सारा चक्र तुम बच्चों की बुद्धि में है। और किसकी भी बुद्धि में है नहीं। बाप एक ही बार समझाते हैं जिससे तुम देवता बनते हो। बाप को आश्चर्य नहीं लगता है। बच्चों को समझाते हैं मैं कल्प2 पुरुषोत्तम संगमयुग पर आता हूँ। गीता में लिख दिया कृष्ण का नाम। भगवानुवाच कृष्ण का चित्र डाल दिया है। इस भूल ने ही भारत को कितना नीचे गिराया है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। अदली–बदली भी हो न सके। देवता तुम बनेंगे फिर नम्बरवार सब आवेंगे। सारी सृष्टि की मनुष्य आत्माएँ जो भी हैं, जिसने जितने जन्म लिये हैं उतना ही लेकर पार्ट बजाना है। इतनी यह सब बातें बूढ़ियों आदि की बुद्धि में न बैठ सके तो बाप सिर्फ कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बस।

वह शिवबाबा सभी आत्माओं का बाप है। शरीर का बाप तो हरेक का अपना–2 है। सभी के शरीर पर नाम पड़ता है। शिवबाबा तो है निराकार। उनको याद भी निराकार आत्मा करती है। याद करते–2 पवित्र बन शरीर छोड़ फिर बाप के पास जाकर पहुँचता है। बाप समझाते तो बहुत हैं; परन्तु सभी एकरस नहीं समझते हैं। माया भुला देती है। युद्ध इनको ही कहा जाता। बाप कितना अच्छी रीति बैठ समझाते हैं। तुमको स्मृति आई? कितनी बातें की स्मृति देते हैं। मुख्य जो भूले हैं उनकी लिस्ट बनाओ। एक बात सर्वव्यापी की, भगवानुवाच मैं सर्वव्यापी नहीं हूँ। सर्वव्यापी तो 5 विकार हैं। यह बड़ी भारी भूल है। गीता का भगवान कृष्ण नहीं, परमपिता परमात्मा शिव है। इन भूतों को सुधारो तो देवता बन जावेंगे; परन्तु ऐसे कब कोई ने लिखा नहीं है कि ऐसे हमने समझाया, लिखाया। इन भूतों के कारण ही भारत पावन से पतित बना है। पतित कैसे हुआ वह भी बताना पड़े। बाप कहते हैं यह–यह कारण है। भारत का उत्थान से पतन बनने का यही कारण है। सर्वव्यापी भगवान हो कैसे सकता। भगवान तो एक है जो सुप्रीम बाप, टीचर, गुरु है। कोई भी देहधारी को सुप्रीम फादर, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सद्गुरु नहीं कह सकते। श्रीकृष्ण सारी सृष्टि में सबसे ऊँचा है। जब सृष्टि तमोप्रधान होती है तब वह आते हैं। फिर सतो में रामचन्द्र। फिर नम्बरवार अपने उस समय पर आते हैं। शास्त्रों में दिखलाते हैं सभी के विकार ले लेकर गला ही काला हो गया है। अभी यह समझाते2 गले ही सुख जाते हैं। बात कितनी थोड़ी है; परन्तु माया कितनी जबरदस्त है। हरेक अपने दिल से पूछे हम ऐसे गुणवान सतोप्रधान हैं। बाप समझाते हैं जब तक विनाश न हुआ है तब तुम कर्मातीत अवस्था को पा न सकेंगे। भल कितना भी माथा मारो। सारा समय शिवबाबा को बैठ याद करो और कोई बात ही न करो, बस बाबा लड़ाई से पहले मैं कर्मातीत अवस्था को पा दिखाऊँगा ऐसा कोई निकले। ऐसे ड्रामा में हो नहीं सकता। पहले नम्बर में तो इनको ही जाना है। यह भी कहते हैं हमको कितना माथा मारना पड़ता है। माया तो और ही रुस्तम बनकर आता है। बाबा खुद कहते हैं मेरे तो बाजु में एकदम शिवबाबा बैठे हैं तो मैं याद नहीं कर सकता हूँ। भूल जाता हूँ। समझता हूँ, बिल्कुल मेरे साथ बाबा है फिर भी मुझे याद तो करना है ना। तुम जैसे करते हो। ऐसे नहीं कि मैं तो साथ हूँ। इसमें ही खुश हो जाना है। नहीं। मुझे भी कहते हैं निरन्तर याद करो। साथ वाले तुम रुस्तम हो। तुमको तो और जास्ती तूफान आवेंगे। नहीं तो बच्चों को कैसे समझा सकेंगे। यह सभी तूफान तो तुमसे पास होंगे। मैं उनके इतना नजदीक बैठे हुए भी कर्मातीत अवस्था को नहीं प्राप्त कर सकता हूँ। तो दूसरा फिर कौन बनेगा। यह मंजिल बहुत ऊँची है। ड्रामा अनुसार सभी पुरुषार्थ करते रहते हैं। भल कोई ऐसे कोशिश कर दिखावे बाबा हम आपसे पहले कर्मातीत अवस्था को पाये यह बनकर दिखाते हैं। हो न सके। यह ड्रामा बना हुआ है। तुमको पुरुषार्थ बहुत करना पड़ता है। मुख्य सारी बात है कैरेक्टर की। देवताओं के कैरेक्टर्स और पतित मनुष्यों की कैरेक्टर्स में कितना फर्क है। तुम जानते हो हमको विकारी कैरेक्टर्स से निर्विकारी बनाने वाला शिवबाबा ही है। तो अब पुरुषार्थ कर बाप को याद करना पड़े। भूलों नहीं। बाकी अबलाएँ बिचारी प्रबल हैं। अर्थात् रावण के वश हैं। तो कर सकती। तुम हो राम ईश्वर के वश। वह है रावण के वश। तो युद्ध चलती है। बाकी राम–रावण का युद्ध नहीं हुआ है। कितना फर्क है। रामायण में कितनी कथाएँ बनाकर लिख दी हैं। बाप कहते हैं अभी तुम्हारी बुद्धि बन्दर जैसी है। अभी मुझे याद करो तो इन देवताओं जैसे कर्तव्य हो जावेंगे। भिन्न–2 प्रकार से बाप रोज़ समझाते हैं। मीठे2 बच्चों अपन को सुधारते जाओ। रोज़ रात को पोतामेल देखो। सारे दिन में कोई आसुरी चलन तो नहीं चले। बगीचे में नम्बरवार तो होते ही हैं। दो एक जैसे कब हो नहीं सकते। सभी आत्माओं को अपना पार्ट मिला हुआ है। हरेक आत्मा का वातावरण आदि सभी अलग2 हैं। और वह रिपीट होता रहता है। हरेक एक्युरेट पार्ट बजाते रहते हैं। बाप भी आकर स्थापना का कार्य कर ही छोड़ते हैं। हर 5000 वर्ष आकर विश्व का मालिक बना देते हैं। बेहद का बाप है ना। तो जरूर नई दुनिया का ही वरसा देंगे। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को नमस्ते।